TDC Part — I   14/3/2022

Perceptual Organisation

Gestalt Approach →

गेस्टाल्ट उपागम का प्रतिपादन मनोविज्ञान के एक प्रमुख School of thoughts है। जिसे गेस्टाल्टवाद कहते हैं। जिसमें Wertheimer Kohler तथा Koffka का नाम महत्वपूर्ण है। गेस्टाल्ट उपागम का अध्ययन चार भागों में बाँट कर किया जा सकता है।

1. Figure and Ground → गेस्टाल्ट सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति किसी वस्तु का प्रत्यक्षण अलग अलग रूप में ना करके उसे सम्पूर्ण रूप से (as a whole) करता है। इस सम्पूर्ण ~~का अवयव~~ प्रत्यक्षण का अपना एक विशेष गुण होता है जो वस्तु के भिन्न भागों के विशेष गुण से अलग होता है। जब व्यक्ति किसी वस्तु विशेष का प्रत्यक्षीकरण करता है, तो उसे वस्तु विशेष का कुछ भाग अत्यंत स्पष्ट दिखाई देता है और कुछ भाग अस्पष्ट दिखाई देता है। स्पष्ट दिखाई देने वाला भाग figure बन जाता है और अस्पष्ट दिखाई देने वाला भाग back ground बन जाता है। इस प्रकार के प्रत्यक्षण को Figure-Ground perception कहते हैं।

2. Principles of Perceptual Organisation →

Gestalt का कहना है कि प्रत्यक्षीकरण में एक प्रकार का संगठन (organisation) पाया जाता है। जब भी व्यक्ति किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण करता है तो उसे एक पैटर्न

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

के रूप में संगठित करके देखता है। यह Perceptual organisation दो तरह के नियमों के द्वारा निर्धारित होता है। पहला है Peripheral principles तथा Central principles.

Peripheral principles परिधीय नियम में उन नियमों को रखा जाता है जो उद्दीपक से सम्बन्धित होते हैं। जैसे उद्दीपक में सन्निकटता (proximity), समानता (similarity) निरंतरता (continuity), अच्छी आकृति (good form), रिक्ति (gap) आदि कुछ ऐसे गुण है जिसमें प्रत्यक्षण में संगठन उत्पन्न होता है। उद्दीपकों के इन गुणों से सम्बन्धित सभी नियम जन्मजात होते हैं।

Central principle (केन्द्रीय नियम) में प्रत्यक्षण में जो संगठन उत्पन्न होता है उसमें अर्थ (meaning), अभिप्रेरणा (motive) मनोवृत्ति (attitude) आदि महत्वपूर्ण है। इसे व्यक्ति अपने जीवन काल में अर्जित करता है। यह जन्मजात नहीं होते हैं।

3. Principles of Isomorphism →

गेस्टाल्टवादियों के द्वारा प्रतिपादित ~~isomo~~ Isomorphism (समाकृतिकता) का नियम एक महत्वपूर्ण नियम है। यह नियम यह बतलाता है कि व्यक्ति जिस घटना या वस्तु का प्रत्यक्षण करता है उससे मस्तिष्क के सम्बन्धित क्षेत्र में भी ~~मस्तिष्क~~ परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार वस्तु तथा उससे सम्बन्धित मस्तिष्कीय परिवर्तन में सीधा सम्बन्ध होता है। इससे स्पष्ट होता है कि perception के दो पहलू होते हैं।

एवं Perceptual field तथा दूसरा brain field. woodworth महोदय ने इन दोनों क्षेत्र के बीच के सम्बन्ध को किसी देश तथा उसके Map के सम्बन्ध से तुलना किया है। क्योंकि वास्तविक क्षेत्र बड़ा होता है और इसका map छोटा होता है।

4. Field force – (क्षेत्र बल)

गेस्टाल्टवादीयों ने दृष्टि क्षेत्र (visual field) में दो प्रकार के बलों की कल्पना की है। जिनके कारण दृष्टि क्षेत्र में कुछ भाग figure बन जाते हैं और कुछ भाग back ground बन जाते हैं। यह दोनों बल है संसजक बल (cohesive force) तथा अवरोधक बल (restraining force). उद्दीपन के स्वरूप के अनुसार दोनों force कार्य करते हैं। अनेकों उद्दीपनों में से कुछ समान होते हैं तथा कुछ भिन्न होते हैं। जो समान होते हैं वे आपस में मिल जाते हैं जिसे cohesive force कहते हैं तथा जो भिन्न होते हैं वे अलग हो जाते हैं जिसे restraing force कहते हैं। cohesive force आकृति बनाते हैं तथा restraing force, back ground बनाते हैं।